स्वामी चिदानंद

श्रीधर राव संन्यास लेने से पूर्व ही स्वामी चिदानंदजी के रूप में जाने जाते थे। इनका जन्म 24 सितम्बर, 1916 को मैंगलोर में एक धर्मपरायण दम्पती श्री श्रीनिवास राव और श्रीमती सरोजिनी देवी के घर में हुआ था। श्रीधर राव में बचपन से ही प्रेम, दया, परोपकार तथा गरीब व बीमार व्यक्तियों के प्रति सेवा भाव भरा हुआ था तथा तप के माध्यम से ईश्वर दर्शन पाना ही उनका आदर्श बन गया था।

स्वामी विवेकानंद तथा श्री स्वामी शिवानंद के आह्वान पर संन्यास की भावना उनके हृदय में घर कर गई थी। 19 मई, 1943 को, बुद्ध पूर्णिमा के पवित्र दिन उन्होंने अपने घर–परिवार का त्याग कर दिया तथा धर्म गुरु श्री स्वामी शिवानंद जी के चरणों में स्वयं को समर्पित कर दिया तथा अपने जीवन की अंतिम सांस तक उनकी तथा उनके मिशन की सेवा की। 10 जुलाई, 1949 को गुरू पूर्णिमा के दिन, श्रीधर राव को श्री स्वामी शिवानंद जी महाराज के द्वारा संन्यास के पुरोहिताभिषेक में दीक्षित किया गया और वे स्वामी चिदानंद के रूप में जाने गए, जिसका अर्थ है ''वह जो उच्चतम चेतना व परमानंद में लीन है।''

कुष्ठरोगियों की सेवा करना बचपन से ही उनका आदर्श था। वे अपने घर के विशाल प्रांगण में उनके लिए झोपडियों का निर्माण करते और उनकी सेवा करते। शिवानंद आश्रम,ऋषिकेश के आस–पास इतनी बड़ी संख्या में कुष्ठरोगियों को दयनीय जीवन जीता देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठा।

उन दिनों अस्पतालों में कुष्ठरोगियों का प्रवेश निषिद्ध था। दयालु स्वामी जी के लिए यह बहुत कष्टदायक था। वे उनके स्वास्थ्य के प्रति पूरा ध्यान देने लगे व उनकी झोपडियों में स्वयं फल तथा दवाईयां पहुंचाने लगे।

जनवरी 1990 में, श्री स्वामी जी ने 20वीं शताब्दी के अंतिम दशक को 'दिव्य दशक' बनाने हेतु दिव्य जीवन सोसाइटी की सभी शाखाओं को प्रेरित किया, ताकि समाज के कल्याणार्थ धर्मार्थ गतिविधियों को बढ़ावा देते हुए 21वीं शताब्दी में प्रवेश को दिव्य बनाया जा सके। उन्होंने हमारे देश के समाज के तीन महत्वपूर्ण वर्गों के लिए कार्य करने की अनुशंसा की –(क) भारत के ग्रामीण लोग, जो कि हमारे देश की रीढ़ हैं, (ख) भारतीय महिलाएं, जो हमारी महान संस्कृति की वास्तविक तथा प्रभावी अभिरक्षक हैं, तथा (ग) भारत का युवा वर्ग, इसके विद्यार्थी तथा युवक जो कि भविष्य के वास्तविक राष्ट्र हैं तथा भारत का भविष्य हैं।

श्री स्वामी जी महाराज एक महान देशभक्त थे तथा महात्मा गांधी तथा स्वामी विवेकानंद के अनन्य प्रशंसक थे।

सर्व धर्म के समर्थक होने के कारण उनके मन में विश्व के सभी धर्मों के लिए बहुत सम्मान था। अपने एक लेख में उन्होंने इसकी पुष्टि इस प्रकार की है –'यह एक ही सार्वभौमिकसत्ता है, जिसे जिहोवा, अल्लाह, अहूरा मजदा, स्वर्ग में परमपिता परमेश्वर, ब्राह्मण, ताओ अथवा थिंग–इन–इटसेल्फ अथवा गॉड के रूप में विभिन्न प्रकार से संबोधित किया जाता है। यही एक सार्वभौमिक सत्ता है जिसकी मंदिरों, सिनागॉग, गिरिजाघर, मस्जिद, फायर–टैम्पल तथा सभी पूजा–स्थलों में पूजा–अर्चना की जाती है। यह सार्वभौमिक सत्ता ही है, जिसकी वेद, तल्मुड, टोरा, बाईबल, कुरान, जेंद अवेस्ता, इत्यादि सभी शास्त्रों में महिमागान व स्तुति की गई है।' अपने सभी प्रवचनों में वे निरपवाद रूप से उस परम सत्ता की श्रद्धापूर्वक स्तुति करने के बाद ही अपना संबोधन प्रारम्भ करते थे, जो सभी धर्मों में ईश्वर की संकल्पना का आदि स्रोत है। सभी धर्मों के प्रति उनकी सार्वभौमिक दृष्टि ने उन्हें विभिन्न धार्मिक मत रखने वालों में लोकप्रिय बना दिया। दूसरे धर्मों के संतों व पूजा स्थलों के लिए उनके मन में अपार श्रद्धा व भक्ति थी। उनकी यात्राओं में सदैव दूसरे धर्मों के संतों व ऋषियों से भेंट करना तथा उनके पवित्र पूजा स्थलों के दर्शन करना शामिल होता था। उनकी सादगी, विनम्रता शिष्टाचार के कारण उन्हें सभी धर्म के लोगों से प्रेम तथा सम्मान प्राप्त हुआ।

श्री स्वामी जी विश्व धर्म संसद के लिए हिन्दू प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष चुने गए, जिसे 1993 में, शिकागो में वर्ष 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद के युगांतकारी आयोजन की शताब्दी के स्मरणोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। ''वास्तविक धर्म जिसकी आज हमें आवश्यकता है''पर अपनी वार्ता में उन्होंने कहा कि हमें आज जिस विशुद्ध व वास्तविक धर्म की आवश्यकता है, वह मात्र धार्मिक अनुष्ठानों व उत्सवों का धर्म नहीं, अपितु हमें एक व्यावहारिक आध्यात्मिकता की आवश्यकता है अर्थात् जिसके माध्यम से हम अपने दैनिक जीवन के क्रियाकलापों में स्वयं ईश्वर को अपने भीतर अभिव्यक्ति प्रदान कर सकें।

एक सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरू होने के बावजूद, श्री स्वामी जी, अप्रतिम विनम्रता व सरलता की प्रतिमूर्ति थे। वे अपने पूरे जीवनकाल में एक साधारण संन्यासी बनकर जिए तथा स्वयं को ईश्वर, गुरू व मानवता का सेवक मानते रहे। अपने कमजोर स्वास्थ्य की परवाह किए बगैर, श्री स्वामी जी जीवन पर्यंत मानव मात्र की सुख–शांति के लिए अपनी सेवाएं समर्पित करते रहे। 28 अगस्त, 2008 को उनका निधन हो गया।

डाक विभाग, स्वामी चिदानंद पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :–

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विरूपण : श्रीमति अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें Stamps Printed	: :	4.03 लाख 0.403 Million
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

SWAMI CHIDANANDA

Sridhar Rao, as Swami Chidanandaji was known before taking Sannyasa, was born to a pious couple Sri Srinivasa Rao and Smt. Sarojini Devi, on 24th September, 1916 at Mangalore. Since childhood, all embracing love, compassion, charity and service of the poor and the sick found an embodiment in Sridhar Rao and doing Tapas for having a vision of the Lord became his ideal.

The call of Swami Vivekananda and Sri Swami Sivananda to renounce resounded within his heart. On 19th May 1943, the sacred day of Buddha Purnima, he left his hearth and home and dedicated himself at the feet of holy master Sri Swami Sivanandaji and served him and his mission till the last breath of his life. On Guru Purnima day, the 10th of July, 1949, Sridhar Rao was initiated into the holy order of Sannyasa by Sri Swami Sivanandaji Maharaj and came to be known as Swami Chidananda, a name which connotes "one who is in the highest consciousness and bliss".

Service to lepers was his ideal from his childhood. He would build huts for them in the vast lawns of his home and look after them. He was deeply moved to see large numbers of lepers living a miserable life in the neighbouring locality to Sivananda Ashram, Rishikesh.

Those days hospitals were forbidden territories for the lepers. It was all very painful to the compassionate Swamiji, and he started giving full attention to their health and himself carrying fruits and medicines to their huts.

In January 1990, Sri Swamiji inspired all the Divine Life Society Branches to make the last decade of the 20th Century, "Divine Decade", a divine entry into 21st Century by intensifying their charitable activities to promote social welfare. He recommended working for the three vital sections of our country's society– (a) the rural people of India who form the backbone of our country, (b) the women of India who are the real and the effective custodians of our sublime culture, and (c) the young people of India, its students and youth who are the real nation of tomorrow and the future India.

Sri Swamiji Maharaj was a great patriot and an ardent admirer of Mahatma Gandhi and Swami Vivekananda.

Being a votary of universal religion, he had great regard for all the religions of the world. In one of his articles he affirmed thus – "There is one Universal Spirit addressed variously as Jehovah, Allah, Ahura Mazda, Almighty Father-in-Heaven, Brahman, the Tao or Thing-in-Itself or GOD. This is the Universal Spirit, adored and worshipped in temple, synagogue, church, mosque, fire-temple and all places of worship. This is the Universal Spirit glorified and praised in all the scriptures like the Vedas, the Talmud and the Torah, in Bible, Quran, Zend-Avesta, etc." In all his discourses, he would invariably commence his address by paying his worshipful homage to the One Absolute who is primal source of all concepts of God in all religions. His universal vision encompassing all religions made him a pioneer in the Inter-faith dialogue. He had great reverence and devotion for the saints and the holy sites of other religions. His tours always included meeting with the saints and sages of different religions and visiting their sacred shrines. His simplicity, humility, unostentatious loving manners earned for him love and reverence from people of all faiths.

Sri Swamiji was chosen the President of Hindu delegation for the Parliament of the World's Religions which was convened at Chicago in 1993 to commemorate the centenary of the epochal event of The Parliament of the World's Religions organized at Chicago in 1893. In his talk on 'The Authentic Religion We Need Today', he said that the authentic and genuine religion that we need today is not merely a religion of ceremonies and sacraments, but a practical spirituality – living in such a way to express God within us in our daily life.

Despite being a well known spiritual teacher, Sri Swamiji, a paragon of unsurpassable humility and simplicity, remained all his life a simple monk considering himself a servant of God, Guru and humanity. Unmindful of his fragile health, Sri Swamiji continued dedicating his service of awakening humanity to its divine destiny and bringing joy and peace in the lives of one and all till he attained Mahasamadhi on 28th August 2008.

Department of Posts is happy to release a commemorative postage stamp on Swami Chidananda.

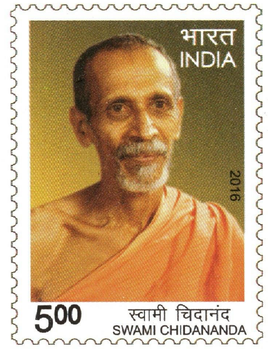
Credits:-

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp/FDC/ Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts

India



स्वामी चिदानंद SWAMI CHIDANANDA

विवरणिका BROCHURE